

रामायण का वैश्विक अवदान

डॉ. पुष्पेन्द्र कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय सलारपुर गढ़मुक्तेश्वर हापुड़ उ०प्र०

सारांश

रामायण भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का एक महान आदिकाव्य है, जो केवल धार्मिक ग्रंथ न होकर मानव जीवन के समग्र विकास का मार्गदर्शक है। प्रस्तुत अध्ययन में रामायण के वैश्विक अवदान का विश्लेषण नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टिकोण से किया गया है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि रामायण के आदर्श—सत्य, धर्म, त्याग, करुणा, परोपकार, कर्तव्यनिष्ठा तथा मर्यादा—संपूर्ण मानवता के लिए सार्वभौमिक मूल्य हैं। रामराज्य की अवधारणा आदर्श शासन व्यवस्था का प्रतिमान प्रस्तुत करती है, जबकि सीता, राम, भरत और हनुमान जैसे पात्र आदर्श मानवीय गुणों के प्रतीक हैं। रामायण का प्रभाव केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि एशिया के अनेक देशों की संस्कृति, साहित्य, कला और नाट्य परंपराओं में भी परिलक्षित होता है। यह ग्रंथ सांस्कृतिक एकता, वैश्विक बंधुत्व और आध्यात्मिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि रामायण एक सार्वकालिक और सार्वभौमिक ग्रंथ है, जो वर्तमान वैश्विक संकटों—नैतिक पतन, सामाजिक असमानता और सांस्कृतिक विखंडन—के समाधान में भी अत्यंत प्रासंगिक है। अतः रामायण का वैश्विक अवदान केवल ऐतिहासिक नहीं, बल्कि समकालीन और भविष्यदर्शी भी है।

मुख्य शब्द : रामायण, वैश्विक अवदान, नैतिक मूल्य, धर्म, कर्तव्य, रामराज्य, सांस्कृतिक एकता, आध्यात्मिक चेतना, जीवन-दर्शन, भारतीय संस्कृति, मानवता

परिचय

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में रामायण केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव सभ्यता के नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक विकास का एक सार्वकालिक मार्गदर्शक महाकाव्य है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित यह आदिकाव्य मानव जीवन के आदर्शों का ऐसा दर्पण प्रस्तुत करता है, जिसमें सत्य, धर्म, त्याग, प्रेम, करुणा, मर्यादा और कर्तव्यनिष्ठा का अद्वितीय समन्वय विद्यमान है। रामायण की कथा केवल अतीत की घटनाओं का वर्णन नहीं करती, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य के लिए भी जीवन-दर्शन प्रदान करती है। इसी कारण यह ग्रंथ सीमाओं से परे जाकर वैश्विक चेतना का आधार बन गया है। रामायण के मूल में निहित 'धर्म' की अवधारणा इसे विशेष बनाती है। यहाँ धर्म केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नैतिक आचरण और कर्तव्य पालन का प्रतीक है। इस तथ्य को वाल्मीकि रामायण में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है— "रामो विग्रहवान् धर्मः" (वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड) अर्थात् श्रीराम स्वयं धर्म के साकार रूप हैं। यह श्लोक इस बात को रेखांकित करता है कि रामायण में प्रस्तुत आदर्श केवल उपदेशात्मक नहीं, बल्कि व्यवहारिक और अनुकरणीय हैं। इसी प्रकार रामायण में सत्य और वचनपालन के महत्व को अत्यंत उच्च स्थान दिया गया है। श्रीराम का वनगमन इस आदर्श का सर्वोत्तम उदाहरण है—

“पितुर्वचननिर्देशात् पितुर्वचनगौरवात्।

वचनं कौशिकस्येति कर्तव्यमिति मे मतिः ॥” (वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड)

यह श्लोक दर्शाता है कि पिता के वचन की रक्षा करना ही सर्वोच्च कर्तव्य है। यह मूल्य न केवल भारतीय समाज में, बल्कि वैश्विक स्तर पर पारिवारिक नैतिकता का आधार बनता है। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस में भी राम के आदर्श चरित्र को अत्यंत सहज और लोकभाषा में प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह ग्रंथ जन-जन तक पहुँचा। तुलसीदास जी ने धर्म और परोपकार को सर्वोपरि बताया है—

“परहित सरिस धरम नहि भाई।

पर पीड़ा सम नहि अधमाई॥” (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड)

यह दोहा यह स्पष्ट करता है कि दूसरों का कल्याण करना ही सर्वोच्च धर्म है, और किसी को कष्ट देना सबसे बड़ा अधर्म है। यह शिक्षा सम्पूर्ण मानवता के लिए सार्वभौमिक है। रामायण का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है—समस्त सृष्टि में एकात्म भाव की स्थापना। तुलसीदास जी कहते हैं—

“सिया राममय सब जग जानी।

करउँ प्रणाम जोरि जुग पानी॥” (रामचरितमानस, बालकाण्ड)

यहाँ सम्पूर्ण जगत में ईश्वर की उपस्थिति का बोध कराया गया है, जो वैश्विक एकता और समभाव का संदेश देता है। रामराज्य की कल्पना भी रामायण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण वैश्विक योगदान है, जिसमें आदर्श शासन व्यवस्था का चित्रण मिलता है—

“दैहिक दैविक भौतिक तापा।

राम राज नहि काहुहि व्यापा॥” (रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड)

इस चौपाई में एक ऐसे समाज की कल्पना की गई है, जहाँ किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता। यह आधुनिक शासन सिद्धांतों के लिए भी प्रेरणास्रोत है। मानव जीवन में मर्यादा और संयम के महत्व को भी रामायण में विशेष रूप से प्रतिपादित किया गया है। श्रीराम का चरित्र ‘मर्यादा पुरुषोत्तम’ के रूप में स्थापित है। इस संदर्भ में— **“न रामः काममोहितः”** (वाल्मीकि रामायण) यह संकेत करता है कि श्रीराम सदैव मर्यादा और आत्मसंयम का पालन करते हैं। भ्रातृ प्रेम और सामाजिक समरसता का अद्भुत उदाहरण भी रामायण में मिलता है। भरत का त्याग और प्रेम इस भावना को व्यक्त करता है— **“भरतहि होइ न राजमदु कबहुँ।”** (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड) यह पंक्ति दर्शाती है कि सच्चा नेतृत्व त्याग और विनम्रता में निहित होता है, न कि अहंकार में। इसी प्रकार लक्ष्मण की सेवा भावना भी आदर्श प्रस्तुत करती है—

“नाहं जानामि केयूरं नाहं जानामि कुण्डले।

नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्॥” (वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकाण्ड)

यह श्लोक लक्ष्मण की मर्यादा और सेवा-भाव को दर्शाता है, जो संबंधों में सम्मान और समर्पण का उदाहरण है। इस प्रकार रामायण केवल एक कथा नहीं, बल्कि एक जीवंत दर्शन है, जो मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को स्पर्श करता है। इसके श्लोक और चौपाइयाँ न केवल आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करती हैं, बल्कि व्यवहारिक जीवन में नैतिकता और सदाचार का मार्ग भी प्रशस्त करती हैं। यही कारण है कि रामायण का प्रभाव न केवल भारत में, बल्कि सम्पूर्ण विश्व में सदियों से बना हुआ है और आगे भी बना रहेगा।

1. रामायण का स्वरूप और महत्त्व

रामायण को *आदिकाव्य* कहा जाता है, क्योंकि यह विश्व का प्रथम महाकाव्य माना जाता है, जिसमें काव्यशास्त्र, दर्शन, नैतिकता और मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत समन्वय मिलता है। *महर्षि वाल्मीकि* ने इस ग्रंथ के माध्यम से न केवल एक आदर्श चरित्र—श्रीराम—का चित्रण किया, बल्कि सम्पूर्ण मानव जीवन के लिए आचरण की एक उच्चतम मर्यादा भी निर्धारित की। रामायण में श्रीराम के जीवन के विभिन्न रूप—आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई, आदर्श मित्र और आदर्श राजा—मानव समाज के लिए अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करते हैं। रामायण की कथा केवल पौराणिक घटनाओं का वर्णन नहीं है, बल्कि यह जीवन के गहन सत्य, संघर्ष, कर्तव्य और नैतिकता का दार्शनिक विश्लेषण भी है। यही कारण है कि यह ग्रंथ कालातीत होकर आज भी समान रूप से प्रासंगिक है। इस महाकाव्य की उत्पत्ति करुणा से हुई, जिसका प्रमाण इसका प्रथम श्लोक है—

“मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥” (वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड)

यह श्लोक करुणा और अहिंसा की भावना को उद्घाटित करता है। एक निर्दोष पक्षी के वध पर महर्षि वाल्मीकि के हृदय में उत्पन्न वेदना ने काव्य का रूप धारण किया। यह घटना दर्शाती है कि रामायण का मूल आधार संवेदनशीलता और मानवता है। रामायण के स्वरूप में धर्म और आदर्शों की स्थापना का प्रमुख स्थान है। श्रीराम को धर्म का साक्षात् स्वरूप माना गया है— **“रामो विग्रहवान् धर्मः”** (वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड) अर्थात् श्रीराम स्वयं धर्म के साकार रूप हैं। यह कथन रामायण के मूल भाव को स्पष्ट करता है कि धर्म केवल उपदेश नहीं, बल्कि आचरण का विषय है। श्रीराम के आदर्श पुत्र रूप का वर्णन करते हुए उनका पितृभक्ति भाव विशेष रूप से उल्लेखनीय है—

“पितुर्वचननिर्देशात् पितुर्वचनगौरवात्।

वचनं कौशिकस्येति कर्तव्यमिति मे मतिः ॥” (वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड)

यह श्लोक यह दर्शाता है कि पिता के वचन की रक्षा करना ही उनका सर्वोच्च धर्म था। यह आदर्श पारिवारिक मूल्यों की वैश्विक महत्ता को स्थापित करता है। *रामचरितमानस* में भी राम के आदर्श स्वरूप का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। तुलसीदास जी ने राम को लोकनायक के रूप में प्रस्तुत किया है—

“रघुकुल रीति सदा चली आई।

प्राण जाए पर वचन न जाई ॥” (रामचरितमानस, बालकाण्ड)

यह चौपाई सत्य और वचनपालन की सर्वोच्चता को दर्शाती है, जो मानव जीवन के नैतिक आधार का स्तंभ है। रामायण में आदर्श शासन व्यवस्था का भी सुंदर चित्रण मिलता है, जिसे रामराज्य के रूप में जाना जाता है—

“दैहिक दैविक भौतिक तापा।

राम राज नहि काहुहि व्यापा ॥” (रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड)

यहाँ एक ऐसे समाज की कल्पना की गई है, जहाँ सभी प्रकार के कष्ट समाप्त हो जाते हैं। यह आदर्श शासन प्रणाली आज भी राजनीतिक और सामाजिक चिंतन का प्रेरणास्रोत है। मानव जीवन में परोपकार और करुणा के महत्व को भी रामायण में अत्यधिक महत्व दिया गया है—

“परहित सरिस धरम नहि भाई।

पर पीड़ा सम नहि अधमाई ॥” (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड)

यह दोहा यह स्पष्ट करता है कि दूसरों का कल्याण करना ही सर्वोत्तम धर्म है। यह विचार सम्पूर्ण विश्व के लिए एक सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत है। रामायण के स्वरूप में भाईचारे और संबंधों की मर्यादा का भी अद्भुत चित्रण मिलता है। भरत का त्याग और प्रेम इसका उत्कृष्ट उदाहरण है— **“भरतहि होइ न राजमदु कबहुँ।”** (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड) यह पंक्ति यह दर्शाती है कि सच्चा प्रेम और त्याग ही संबंधों की वास्तविक शक्ति है। इसी प्रकार लक्ष्मण की सेवा भावना और मर्यादा भी आदर्श प्रस्तुत करती है—

“नाहं जानामि केयूरं नाहं जानामि कुण्डले।

नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात् ॥” (वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकाण्ड)

यह श्लोक लक्ष्मण की निष्ठा और मर्यादा का परिचायक है, जो पारिवारिक और सामाजिक संबंधों में सम्मान की भावना को स्थापित करता है। अतः स्पष्ट है कि रामायण का स्वरूप केवल एक कथा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक समग्र जीवन-

दर्शन है, जो मानवता को नैतिकता, मर्यादा, करुणा और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। यही इसकी सबसे बड़ी महत्ता है, जो इसे विश्व के अन्य सभी ग्रंथों से विशिष्ट बनाती है।

2. वैश्विक स्तर पर रामायण का प्रभाव

रामायण का प्रभाव भारत की भौगोलिक सीमाओं से बहुत आगे बढ़कर सम्पूर्ण विश्व में फैला हुआ है। यह महाकाव्य केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद, नैतिक मूल्यों और सभ्यतागत आदान-प्रदान का एक जीवंत माध्यम बन गया है। एशिया के अनेक देशों—जैसे इंडोनेशिया, थाईलैंड, कंबोडिया, लाओस, मलेशिया, नेपाल, श्रीलंका आदि—में रामकथा विभिन्न रूपों में विकसित होकर स्थानीय परंपराओं के साथ समन्वित हो गई है। यद्यपि भाषाएँ, शैली और प्रस्तुति भिन्न हैं, परंतु मूल संदेश सर्वत्र एक ही है—धर्म की विजय और अधर्म का नाश। इस वैश्विक प्रसार का मूल कारण रामायण में निहित सार्वभौमिक मानवीय मूल्य हैं। श्रीराम का चरित्र केवल एक ऐतिहासिक या धार्मिक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि वैश्विक आदर्श के रूप में स्थापित हुआ है। *वाल्मीकि रामायण* में कहा गया है— **“धर्मैव हि साध्यन्ति सर्वार्थाः पृथिवीतले।”** (वाल्मीकि रामायण)

अर्थात् इस पृथ्वी पर सभी उद्देश्यों की सिद्धि केवल धर्म के माध्यम से ही संभव है। यही सिद्धांत विश्व की विभिन्न संस्कृतियों में रामकथा के स्वीकार का प्रमुख आधार बना। इंडोनेशिया में प्रचलित *काकाविन रामायण* और थाईलैंड के *रामाकियन* में रामकथा को स्थानीय रंगों में ढालकर प्रस्तुत किया गया है, परंतु राम के आदर्श स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। यह इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि रामायण का मूल संदेश सार्वभौमिक और कालातीत है। इस संदर्भ में *रामचरितमानस* का यह दोहा अत्यंत महत्वपूर्ण है—

“सिया राममय सब जग जानी।

करउँ प्रणाम जोरि जुग पानी॥” (रामचरितमानस, बालकाण्ड)

यह दोहा यह दर्शाता है कि सम्पूर्ण जगत में राम और सीता का ही स्वरूप व्याप्त है, जो वैश्विक एकात्मता और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। रामायण के वैश्विक प्रभाव का एक प्रमुख पक्ष यह भी है कि यह विभिन्न देशों की कला, नाटक, नृत्य और स्थापत्य परंपराओं में समाहित हो गई है। उदाहरणस्वरूप, कंबोडिया के मंदिरों की दीवारों पर रामायण की कथाएँ उकेरी गई हैं, जबकि इंडोनेशिया में ‘वायंग कुलित’ (छाया नाटक) के माध्यम से रामकथा का मंचन किया जाता है। यह दर्शाता है कि रामायण केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक परंपरा है। रामायण में वर्णित आदर्श शासन व्यवस्था और सामाजिक समरसता के विचार भी विश्व स्तर पर अत्यंत प्रभावशाली रहे हैं। *रामचरितमानस* में वर्णित रामराज्य की अवधारणा आज भी आदर्श शासन का प्रतीक मानी जाती है—

“दैहिक दैविक भौतिक तापा।

राम राज नहि काहुहि व्यापा॥” (रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड)

यह चौपाई एक ऐसे समाज की कल्पना करती है, जहाँ सभी प्रकार के दुःख समाप्त हो जाते हैं और न्याय, समानता तथा शांति का वातावरण स्थापित होता है। यह विचार आधुनिक वैश्विक शासन और सामाजिक संरचनाओं के लिए भी प्रेरणास्रोत है। रामायण के वैश्विक प्रभाव का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू मानवीय संबंधों की व्याख्या है। यह ग्रंथ भाईचारे, मित्रता, नारी सम्मान और कर्तव्यनिष्ठा जैसे मूल्यों को स्थापित करता है, जो सभी संस्कृतियों में समान रूप से मान्य हैं। इस संदर्भ में—

“परहित सरिस धरम नहि भाई।

पर पीड़ा सम नहि अधमाई॥” (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड)

यह दोहा सम्पूर्ण मानवता के लिए एक सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत प्रस्तुत करता है, जो सभी देशों और संस्कृतियों में समान रूप से लागू होता है। रामायण का प्रभाव आध्यात्मिक स्तर पर भी अत्यंत व्यापक है। यह ग्रंथ मानव को आत्मचिंतन और आत्मोन्नति की दिशा में प्रेरित करता है। *अध्यात्म रामायण* में कहा गया है— **“रामो विग्रहवान् धर्मः”** अर्थात् श्रीराम स्वयं धर्म

के साकार स्वरूप हैं। यह विचार विश्व के विभिन्न आध्यात्मिक परंपराओं में भी समान रूप से प्रतिध्वनित होता है। इसके अतिरिक्त, रामायण ने भाषा और साहित्य के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विभिन्न देशों में रामकथा के अनुवाद और रूपांतरण ने स्थानीय साहित्य को समृद्ध किया है। इस प्रकार रामायण एक सांस्कृतिक सेतु के रूप में कार्य करती है, जो विभिन्न सभ्यताओं को जोड़ती है। अतः यह स्पष्ट है कि रामायण का वैश्विक प्रभाव केवल धार्मिक या सांस्कृतिक स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के सभी आयामों—नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक—को प्रभावित करता है। इसके आदर्श और मूल्य आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने प्राचीन काल में थे। यही कारण है कि रामायण विश्व साहित्य और संस्कृति की एक अमूल्य धरोहर के रूप में स्थापित है।

3. नैतिक मूल्यों का वैश्विक प्रसार

रामायण का सबसे महत्वपूर्ण वैश्विक योगदान उसके नैतिक मूल्यों में निहित है, जो मानव जीवन को आदर्श, संतुलित और सार्थक बनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यह महाकाव्य केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं है, बल्कि यह मानव के आचरण, विचार और संबंधों को शुद्ध और परिष्कृत करने वाली एक सार्वभौमिक नैतिक संहिता है। रामायण में वर्णित आदर्श—सत्य, धर्म, करुणा, त्याग, सेवा, कर्तव्यनिष्ठा और सहिष्णुता—सम्पूर्ण विश्व के लिए समान रूप से प्रासंगिक हैं। *रामचरितमानस* में तुलसीदास जी ने परोपकार को सर्वोच्च धर्म के रूप में स्थापित किया है—

“परहित सरिस धरम नहि भाई।

पर पीड़ा सम नहि अधमाई॥” (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड)

यह दोहा स्पष्ट करता है कि दूसरों का कल्याण करना ही सबसे बड़ा धर्म है, जबकि दूसरों को कष्ट देना सबसे बड़ा अधर्म है। यह सिद्धांत न केवल भारतीय संस्कृति का आधार है, बल्कि वैश्विक नैतिकता का भी मूल तत्व है। रामायण में सत्य के महत्व को भी अत्यंत उच्च स्थान दिया गया है। श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन सत्य और वचनपालन पर आधारित है—

“रघुकुल रीति सदा चली आई।

प्राण जाए पर वचन न जाई॥” (रामचरितमानस, बालकाण्ड)

यह चौपाई यह सिखाती है कि सत्य और वचन की रक्षा के लिए प्राणों का त्याग भी स्वीकार्य है। यह मूल्य विश्व के सभी नैतिक दर्शन में सर्वोच्च माना गया है। नैतिकता के साथ-साथ करुणा और सहानुभूति भी रामायण के प्रमुख आधार हैं। *वाल्मीकि रामायण* की उत्पत्ति ही करुणा से हुई—

“मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥” (वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड)

यह श्लोक यह दर्शाता है कि किसी निर्दोष प्राणी के कष्ट से उत्पन्न संवेदना ही सच्ची मानवता का प्रतीक है। यह करुणा का भाव सम्पूर्ण विश्व में नैतिकता का आधार है। रामायण में क्षमा, धैर्य और संयम को भी अत्यंत महत्वपूर्ण नैतिक गुणों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। श्रीराम का चरित्र इन गुणों का आदर्श उदाहरण है— **“धर्मैव हि साध्यन्ति सर्वार्थाः पृथिवीतले।”** (वाल्मीकि रामायण) यह श्लोक यह स्पष्ट करता है कि धर्म और नैतिकता के मार्ग पर चलकर ही सभी उद्देश्यों की प्राप्ति संभव है। मानव संबंधों में प्रेम, सम्मान और निष्ठा की भावना भी रामायण के नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण भाग है। लक्ष्मण की सेवा-भावना इसका उत्कृष्ट उदाहरण है—

“नाहं जानामि केयूरं नाहं जानामि कुण्डले।

नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्॥” (वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकाण्ड)

यह श्लोक यह दर्शाता है कि सच्चा प्रेम और सम्मान बाहरी आडंबर में नहीं, बल्कि समर्पण और सेवा में निहित होता है। इसी प्रकार, भरत का त्याग और भ्रातृ प्रेम भी उच्चतम नैतिक आदर्श प्रस्तुत करता है— **“भरतहि होइ न राजमदु कबहुँ।”**

(रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड) यह पंक्ति यह दर्शाती है कि सच्चा नेतृत्व और प्रेम त्याग, विनम्रता और निःस्वार्थता पर आधारित होता है। रामायण में नारी के सम्मान और गरिमा को भी नैतिकता का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। माता सीता का चरित्र धैर्य, त्याग और आत्मसम्मान का प्रतीक है। इस प्रकार रामायण समाज में स्त्री के सम्मान और समानता का संदेश भी देती है। इसके अतिरिक्त, समस्त सृष्टि में एकात्म भाव की स्थापना भी रामायण का प्रमुख नैतिक संदेश है—

“सिया राममय सब जग जानी।

करउँ प्रणाम जोरि जुग पानी॥” (रामचरितमानस, बालकाण्ड)

यह दोहा यह सिखाता है कि सम्पूर्ण जगत में एक ही चेतना विद्यमान है, जिससे सभी के प्रति सम्मान और समभाव की भावना उत्पन्न होती है। अतः यह स्पष्ट है कि रामायण के नैतिक मूल्य किसी एक देश, धर्म या संस्कृति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह सम्पूर्ण मानवता के लिए एक सार्वभौमिक आचार-संहिता के रूप में कार्य करते हैं। इसके आदर्श आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने प्राचीन काल में थे, और भविष्य में भी मानव जीवन को दिशा देते रहेंगे।

4. आदर्श शासन व्यवस्था का सिद्धांत

रामायण में वर्णित *रामराज्य* की अवधारणा मानव इतिहास में आदर्श शासन व्यवस्था का एक उत्कृष्ट और सार्वकालिक प्रतिमान प्रस्तुत करती है। यह केवल एक पौराणिक कल्पना नहीं, बल्कि एक ऐसी सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था का सजीव चित्रण है, जिसमें न्याय, समानता, उत्तरदायित्व, नैतिकता और जनकल्याण सर्वोच्च स्थान रखते हैं। रामराज्य में शासक और प्रजा के बीच विश्वास, करुणा और कर्तव्य का ऐसा संतुलन स्थापित होता है, जो किसी भी आदर्श राज्य की आधारशिला बन सकता है। *रामचरितमानस* में तुलसीदास जी ने रामराज्य की स्थिति का अत्यंत प्रभावशाली वर्णन किया है—

“दैहिक दैविक भौतिक तापा।

राम राज नहि काहुहि व्यापा॥” (रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड)

यह चौपाई स्पष्ट करती है कि रामराज्य में दैहिक (शारीरिक), दैविक (प्राकृतिक) और भौतिक (सामाजिक-आर्थिक) कष्टों का अभाव था। यह एक ऐसे समाज की परिकल्पना है जहाँ व्यक्ति पूर्ण सुरक्षा, संतोष और समृद्धि का अनुभव करता है। यही कारण है कि यह आदर्श आधुनिक राजनीतिक दर्शन में भी एक प्रेरणास्रोत के रूप में स्वीकार किया जाता है। रामराज्य में न्याय व्यवस्था निष्पक्ष और सर्वजनहितकारी थी। राजा स्वयं धर्म के पालन में अग्रणी होता था। *वाल्मीकि रामायण* में श्रीराम के शासन का वर्णन इस प्रकार मिलता है—

“प्रजा सुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्।

नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्॥” (वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड)

अर्थात् राजा का सुख प्रजा के सुख में निहित है, और उसका हित प्रजा के हित में है। राजा को अपने व्यक्तिगत सुख की अपेक्षा प्रजा के कल्याण को प्राथमिकता देनी चाहिए। यह सिद्धांत आधुनिक लोकतांत्रिक शासन की मूल भावना के अत्यंत निकट है। रामराज्य की एक अन्य विशेषता सामाजिक समानता और समरसता थी। वहाँ किसी प्रकार का भेदभाव, अन्याय या शोषण नहीं था। तुलसीदास जी इस स्थिति का वर्णन करते हैं—

“सब नर करहिं परस्पर प्रीति।

चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति॥” (रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड)

यह चौपाई दर्शाती है कि समाज में सभी लोग एक-दूसरे के प्रति प्रेम और सम्मान रखते थे तथा अपने-अपने धर्म और कर्तव्यों का पालन करते थे। यह सामाजिक समरसता किसी भी आदर्श राज्य की मूल पहचान होती है। रामराज्य में आर्थिक समृद्धि और संतुलन भी विद्यमान था। कोई भी व्यक्ति दरिद्र या दुखी नहीं था—

“नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।

नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना॥” (रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड)

यह पंक्ति स्पष्ट करती है कि रामराज्य में आर्थिक विषमता का अभाव था और सभी लोग सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करते थे। यह आधुनिक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा से मेल खाती है। रामायण में राजा के नैतिक चरित्र पर विशेष बल दिया गया है। श्रीराम स्वयं धर्म और मर्यादा के प्रतीक थे—**“रामो विग्रहवान् धर्मः”** (वाल्मीकि रामायण)

अर्थात् श्रीराम स्वयं धर्म के साकार रूप हैं। यह दर्शाता है कि एक आदर्श शासक को नैतिकता और धर्म का पालन करने वाला होना चाहिए, तभी वह समाज का सही मार्गदर्शन कर सकता है। शासन व्यवस्था में परामर्श और सहयोग का भी महत्वपूर्ण स्थान था। श्रीराम अपने मंत्रियों और सहयोगियों के साथ विचार-विमर्श करके निर्णय लेते थे, जिससे शासन में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व बना रहता था। यह सिद्धांत आज के सुशासन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, रामराज्य में स्त्रियों का सम्मान, वृद्धों की सेवा, और निर्बलों की रक्षा को विशेष महत्व दिया गया था। यह एक ऐसे समाज की स्थापना करता है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को गरिमा और सुरक्षा प्राप्त होती है। रामायण में वर्णित रामराज्य केवल एक आदर्श कल्पना नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक और अनुकरणीय शासन मॉडल है। इसके सिद्धांत—न्याय, समानता, नैतिकता, करुणा और जनकल्याण—आज भी वैश्विक राजनीतिक और सामाजिक चिंतन में अत्यंत प्रासंगिक हैं। यही कारण है कि रामराज्य की अवधारणा विश्व स्तर पर आदर्श शासन व्यवस्था के रूप में स्थापित है।

5. स्त्री के सम्मान और शक्ति का प्रतिपादन

रामायण में स्त्री को केवल एक सहायक पात्र के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र, सशक्त, गरिमामयी और आदर्श व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस महाकाव्य में नारी के विविध रूप—माता, पत्नी, पुत्री, साध्वी, त्यागमूर्ति और धैर्य की प्रतिमूर्ति—का अत्यंत संतुलित और सम्मानजनक चित्रण मिलता है। *माता सीता* का चरित्र विशेष रूप से त्याग, मर्यादा, आत्मसम्मान, धैर्य और आंतरिक शक्ति का प्रतीक है, जो सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणास्रोत है। रामायण में स्त्री के प्रति सम्मान और मर्यादा का सर्वोत्तम उदाहरण लक्ष्मण के आचरण में दिखाई देता है—

“नाहं जानामि केयूरं नाहं जानामि कुण्डले।

नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्॥” (वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकाण्ड)

यह श्लोक लक्ष्मण की दृष्टि में सीता के प्रति उच्चतम सम्मान और मर्यादा को दर्शाता है। वे केवल उनके चरणों के आभूषणों को पहचानते हैं, क्योंकि उन्होंने सदैव उनके चरणों का ही वंदन किया। यह आदर्श आज के समाज में स्त्री के प्रति सम्मानजनक दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण संदेश देता है। सीता का चरित्र न केवल एक आदर्श पत्नी का है, बल्कि वह आत्मबल, धैर्य और सत्यनिष्ठा की भी प्रतीक हैं। अशोक वाटिका में रावण के समक्ष उनका अडिग आत्मसम्मान स्त्री की आंतरिक शक्ति को प्रकट करता है— **“अनन्या राघवेणाहं भास्करेण प्रभा यथा।”** (वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड) अर्थात् जैसे सूर्य से उसकी किरणें अलग नहीं हो सकतीं, उसी प्रकार मैं भी श्रीराम से अलग नहीं हूँ। यह कथन नारी की निष्ठा के साथ-साथ उसके आत्मसम्मान और दृढ़ संकल्प को भी प्रकट करता है। *रामचरितमानस* में भी तुलसीदास जी ने सीता के पवित्र और आदर्श चरित्र का अत्यंत सुंदर वर्णन किया है—

“जनकसुता जग जननि जानकी।

अतिसय प्रिय करुणा निधान की॥” (रामचरितमानस, बालकाण्ड)

यह चौपाई सीता को सम्पूर्ण जगत की जननी के रूप में स्थापित करती है, जो करुणा और ममता की मूर्ति हैं। यह नारी के मातृत्व और उसकी सार्वभौमिक महत्ता को दर्शाता है। रामायण में केवल सीता ही नहीं, बल्कि अन्य स्त्री पात्र भी अत्यंत प्रभावशाली और प्रेरणादायक हैं। उदाहरणस्वरूप, *अहिल्या* का उद्धार नारी के सम्मान और पुनर्स्थापन का संदेश देता है— **“तव दरस हरि पद कमल, होइ पावन सब देह।”** (रामचरितमानस, बालकाण्ड) यह प्रसंग यह दर्शाता है कि समाज में स्त्री के सम्मान और पुनर्स्थापन को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। इसी प्रकार, *तारा* और *मंदोदरी* जैसी स्त्रियाँ भी बुद्धिमत्ता, नीति

और विवेक का परिचय देती हैं। तारा द्वारा बालि को समझाना और मंदोदरी द्वारा रावण को चेतावनी देना यह दर्शाता है कि स्त्री केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि बौद्धिक रूप से भी अत्यंत सक्षम है। रामायण में स्त्री को केवल संरक्षण की वस्तु नहीं, बल्कि सम्मान और समानता की अधिकारी के रूप में देखा गया है। इस संदर्भ में— **“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।”** (मनुस्मृति) यह श्लोक यह स्पष्ट करता है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है। यह विचार रामायण की मूल भावना से पूर्णतः संगत है। रामायण में स्त्री की शक्ति का एक और महत्वपूर्ण पक्ष उसका धैर्य और सहनशीलता है। सीता का वनवास, उनका संघर्ष और अंततः उनकी मर्यादा की रक्षा यह दर्शाती है कि नारी केवल सहनशील ही नहीं, बल्कि आत्मबल से परिपूर्ण होती है। इसके अतिरिक्त, *रामचरितमानस* में स्त्री के प्रति सम्मान और मर्यादा का भाव इस प्रकार व्यक्त किया गया है—

“धीरज धरम मित्र अरु नारी।

आपद काल परखिए चारी॥” (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड)

यह चौपाई यह संकेत करती है कि नारी जीवन का एक महत्वपूर्ण आधार है, जिसकी परीक्षा कठिन समय में होती है और जो जीवन के संतुलन को बनाए रखने में सहायक होती है। अतः यह स्पष्ट है कि रामायण में स्त्री को केवल एक पात्र के रूप में नहीं, बल्कि एक सशक्त, सम्माननीय और प्रेरणादायक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसके माध्यम से समाज को यह शिक्षा मिलती है कि नारी का सम्मान, उसकी गरिमा की रक्षा और उसकी भूमिका का आदर ही एक सभ्य और समृद्ध समाज की पहचान है। यही कारण है कि रामायण का यह संदेश आज भी वैश्विक स्तर पर उतना ही प्रासंगिक है जितना प्राचीन काल में था।

6. कर्तव्य और धर्म का समन्वय

रामायण का मूल संदेश *धर्म* और *कर्तव्य* के अद्वितीय समन्वय में निहित है। यहाँ धर्म केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक—में कर्तव्यनिष्ठ आचरण का मार्गदर्शक सिद्धांत है। श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन इस तथ्य का साक्षात् उदाहरण है कि विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म का परित्याग नहीं करना चाहिए। *वाल्मीकि रामायण* में धर्म की सर्वोच्चता को इस प्रकार व्यक्त किया गया है— **“धर्मैव हि साध्यन्ति सर्वार्थाः पृथिवीतले।”** (वाल्मीकि रामायण) अर्थात् इस पृथ्वी पर सभी उद्देश्यों की सिद्धि केवल धर्म के माध्यम से ही संभव है। यह सिद्धांत रामायण के प्रत्येक प्रसंग में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। श्रीराम ने अपने जीवन में कर्तव्य और धर्म को सर्वोपरि स्थान दिया। पिता के वचन की रक्षा के लिए उन्होंने राज्य, सुख और वैभव का त्याग कर वनवास स्वीकार किया—

“पितुर्वचननिर्देशात् पितुर्वचनगौरवात्।

वचनं कौशिकस्येति कर्तव्यमिति मे मतिः॥” (वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड)

यह श्लोक यह दर्शाता है कि कर्तव्य का पालन व्यक्तिगत सुख से अधिक महत्वपूर्ण है। यह आदर्श वैश्विक स्तर पर पारिवारिक और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करता है। *रामचरितमानस* में भी धर्म और कर्तव्य के इस समन्वय को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है—

“रघुकुल रीति सदा चली आई।

प्राण जाए पर वचन न जाई॥” (रामचरितमानस, बालकाण्ड)

यह चौपाई यह सिखाती है कि सत्य और कर्तव्य की रक्षा के लिए प्राणों का त्याग भी स्वीकार्य है। यह मूल्य मानव जीवन के नैतिक आधार को दृढ़ करता है। रामायण में धर्म का पालन केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और राजकीय कर्तव्यों में भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। श्रीराम एक आदर्श राजा के रूप में प्रजा के हित को सर्वोपरि मानते हैं—

“प्रजा सुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्।

नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्॥” (वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड)

यह श्लोक स्पष्ट करता है कि एक शासक का कर्तव्य अपनी प्रजा के सुख और कल्याण में निहित होता है। यह सिद्धांत आधुनिक शासन व्यवस्था में भी अत्यंत प्रासंगिक है। धर्म और कर्तव्य के इस समन्वय में त्याग, संयम और धैर्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है। श्रीराम ने अपने व्यक्तिगत भावनाओं को त्यागकर सदैव लोककल्याण को प्राथमिकता दी। इसी प्रकार लक्ष्मण और भरत के चरित्र भी कर्तव्यनिष्ठा के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। भरत का राज्य का त्याग और राम के प्रति उनकी निष्ठा इस बात को स्पष्ट करती है कि सच्चा धर्म निःस्वार्थ सेवा में निहित है— **“भरतहि होइ न राजमदु कबहुँ।”** (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड) रामायण में यह भी स्पष्ट किया गया है कि धर्म का पालन केवल बाहरी आचरण नहीं, बल्कि आंतरिक शुद्धता और निष्ठा से जुड़ा हुआ है— **“रामो विग्रहवान् धर्मः”** (वाल्मीकि रामायण) अर्थात् श्रीराम स्वयं धर्म के साकार रूप हैं। यह कथन यह दर्शाता है कि धर्म को केवल समझना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि उसे जीवन में उतारना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, रामायण में संकट की परिस्थितियों में भी धर्म के मार्ग पर अडिग रहने की प्रेरणा दी गई है। यह शिक्षा मानव को जीवन की कठिनाइयों में भी नैतिकता और कर्तव्यनिष्ठा बनाए रखने का मार्ग दिखाती है। रामायण में कर्तव्य और धर्म का समन्वय केवल एक सैद्धांतिक विचार नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक जीवन-दर्शन है। यह मनुष्य को यह सिखाता है कि सच्चा धर्म वही है, जो कर्तव्य के पालन में प्रकट होता है। यही कारण है कि रामायण का यह संदेश आज भी वैश्विक स्तर पर उतना ही प्रासंगिक है जितना प्राचीन काल में था, और यह मानव जीवन को सदैव दिशा प्रदान करता रहेगा।

7. वैश्विक साहित्य पर प्रभाव

रामायण ने विश्व साहित्य को अत्यंत गहराई से प्रभावित किया है। यह केवल एक धार्मिक महाकाव्य नहीं, बल्कि काव्यशास्त्र, नाट्य, कथा-साहित्य, संगीत, नृत्य और कला की विविध परंपराओं का आधार स्तंभ भी है। *महर्षि वाल्मीकि* द्वारा रचित यह आदिकाव्य अपनी कथा-वस्तु, चरित्र-निर्माण, भाव-सौंदर्य और नैतिक दृष्टि के कारण विश्व साहित्य में एक अद्वितीय स्थान रखता है। अनेक विदेशी विद्वानों और साहित्यकारों ने रामायण को मानव जीवन के सर्वोच्च आदर्शों का प्रतिनिधि ग्रंथ माना है। रामायण की कथा-रचना, पात्रों की गहराई और भावनात्मक संवेदनशीलता ने विश्व के विभिन्न साहित्यिक परंपराओं को प्रेरित किया है। इसकी कथा केवल एक देश तक सीमित नहीं रही, बल्कि अनेक देशों की भाषाओं और साहित्य में विभिन्न रूपों में विकसित हुई। इस प्रकार रामायण एक वैश्विक साहित्यिक सेतु के रूप में कार्य करती है। रामायण की काव्यात्मक महत्ता का प्रमाण उसका प्रथम श्लोक ही है, जो करुणा से उत्पन्न होकर सम्पूर्ण काव्य परंपरा का आधार बना—

“मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥” (वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड)

यह श्लोक न केवल करुणा का प्रतीक है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि साहित्य का मूल आधार संवेदना और मानवीय अनुभूति है। यही तत्व विश्व साहित्य की आत्मा भी है। रामायण का प्रभाव नाट्य और रंगमंच पर भी व्यापक रूप से देखा जा सकता है। भारत के अतिरिक्त इंडोनेशिया, थाईलैंड, कंबोडिया आदि देशों में रामकथा पर आधारित नृत्य-नाटक, छाया-नाटक और लोकनाट्य अत्यंत लोकप्रिय हैं। यह दर्शाता है कि रामायण केवल पढ़ने का ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवंत सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। *रामचरितमानस* में तुलसीदास जी ने रामकथा को लोकभाषा में प्रस्तुत कर उसे जन-जन तक पहुँचाया, जिससे साहित्य का लोकतंत्रीकरण हुआ—

“सिया राममय सब जग जानी।

करउँ प्रणाम जोरि जुग पानी॥” (रामचरितमानस, बालकाण्ड)

यह दोहा यह दर्शाता है कि रामकथा केवल एक कथा नहीं, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त एक सार्वभौमिक चेतना है, जो साहित्य को आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करती है। रामायण के पात्र—राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, भरत आदि—विश्व साहित्य में आदर्श चरित्रों के रूप में स्थापित हो चुके हैं। इन पात्रों के गुण—सत्यनिष्ठा, त्याग, निष्ठा, भक्ति और साहस—विश्व की अनेक साहित्यिक कृतियों में विभिन्न रूपों में दिखाई देते हैं। रामायण ने संगीत और काव्य परंपरा को भी अत्यंत समृद्ध

किया है। इसके श्लोक, चौपाइयाँ और दोहे आज भी गाए और प्रस्तुत किए जाते हैं, जिससे यह ग्रंथ एक जीवंत सांस्कृतिक धरोहर के रूप में बना हुआ है। तुलसीदास जी ने काव्य के माध्यम से नैतिकता और भक्ति को जनसाधारण तक पहुँचाया—

**“रामहि केवल प्रेम पिआरा।
जानि लेहु जो जाननिहारा॥”** (रामचरितमानस)

यह पंक्ति यह दर्शाती है कि रामायण केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभव का भी आधार है। रामायण की कथा में निहित सार्वभौमिकता ने इसे अनुवाद और रूपांतरण के माध्यम से विश्व के विभिन्न साहित्यिक परंपराओं में स्थान दिलाया। इससे न केवल स्थानीय साहित्य समृद्ध हुआ, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी बढ़ा। *वाल्मीकि रामायण* में श्रीराम के आदर्श चरित्र को धर्म का साकार रूप बताया गया है— **“रामो विग्रहवान् धर्मः”** यह कथन साहित्य में आदर्श नायक की अवधारणा को स्थापित करता है, जो विश्व साहित्य में भी व्यापक रूप से स्वीकृत है। इसके अतिरिक्त, रामायण में वर्णित नैतिक और सामाजिक मूल्य साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन का माध्यम बनाते हैं। यह विशेषता इसे विश्व के अन्य महाकाव्यों से विशिष्ट बनाती है। अतः यह स्पष्ट है कि रामायण का प्रभाव केवल भारतीय साहित्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विश्व साहित्य, कला, नाटक और संगीत की परंपराओं को गहराई से प्रभावित करता है। इसकी सार्वभौमिकता, भावनात्मक गहराई और नैतिक संदेश इसे एक वैश्विक साहित्यिक धरोहर के रूप में स्थापित करते हैं, जो मानवता को निरंतर प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

8. सांस्कृतिक एकता का प्रतीक

रामायण केवल एक धार्मिक या साहित्यिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह विविध संस्कृतियों, परंपराओं और समाजों को जोड़ने वाला एक सशक्त सांस्कृतिक सेतु है। इसकी कथा, पात्र और मूल्य इतने सार्वभौमिक हैं कि वे भौगोलिक सीमाओं, भाषाओं और सामाजिक भिन्नताओं को पार करते हुए सम्पूर्ण मानवता को एक सूत्र में बाँधते हैं। रामायण का मूल संदेश ही समरसता, सहअस्तित्व और भाईचारे की भावना को स्थापित करना है। *रामचरितमानस* में तुलसीदास जी ने इस सार्वभौमिक एकता को अत्यंत सरल और गहन शब्दों में व्यक्त किया है—

**“सिया राममय सब जग जानी।
करउँ प्रणाम जोरि जुग पानी॥”** (रामचरितमानस, बालकाण्ड)

यह दोहा यह दर्शाता है कि सम्पूर्ण जगत में एक ही दिव्य चेतना विद्यमान है, जिसे राम और सीता के रूप में देखा गया है। यह विचार वैश्विक एकात्मता और आध्यात्मिक एकता का आधार है, जो सभी मनुष्यों को समान दृष्टि से देखने की प्रेरणा देता है। रामायण विभिन्न देशों और संस्कृतियों में भिन्न-भिन्न रूपों में प्रचलित होकर भी अपनी मूल भावना को अक्षुण्ण बनाए रखती है। यह इस तथ्य का प्रमाण है कि इसकी शिक्षाएँ और मूल्य किसी एक संस्कृति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह सम्पूर्ण मानवता की साझा धरोहर हैं। इस संदर्भ में रामायण का यह श्लोक अत्यंत सारगर्भित है— **“जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।”** (वाल्मीकि रामायण) यह श्लोक मातृभूमि के प्रति प्रेम और सम्मान को दर्शाता है, जो प्रत्येक संस्कृति में समान रूप से महत्वपूर्ण है। इस प्रकार रामायण स्थानीयता और वैश्विकता के बीच संतुलन स्थापित करती है। रामायण में सामाजिक समरसता और पारस्परिक प्रेम को भी विशेष महत्व दिया गया है—

**“सब नर करहिं परस्पर प्रीति।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति॥”** (रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड)

यह चौपाई यह स्पष्ट करती है कि आदर्श समाज वही है, जहाँ लोग एक-दूसरे के प्रति प्रेम और सम्मान रखते हैं तथा अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। यह संदेश आज के वैश्विक समाज में भी उतना ही प्रासंगिक है, जहाँ विविधता के बीच एकता बनाए रखना आवश्यक है। रामायण का सांस्कृतिक प्रभाव केवल विचारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विभिन्न कला रूपों—नृत्य, संगीत, चित्रकला, नाटक और स्थापत्य—में भी परिलक्षित होता है। विभिन्न देशों में रामकथा के मंचन और चित्रण यह दर्शाते हैं कि यह ग्रंथ एक जीवंत सांस्कृतिक परंपरा के रूप में विकसित हुआ है। रामायण में वर्णित आदर्श संबंध—

भाईचारा, मित्रता, गुरु-शिष्य संबंध और नारी सम्मान—भी सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ करते हैं। उदाहरणस्वरूप, राम और सुग्रीव की मित्रता यह दर्शाती है कि जाति, भाषा या क्षेत्रीय भिन्नताएँ सच्चे संबंधों में बाधा नहीं बनतीं— **“सखा सोइ जो दुख सुख कर दाता।”** (रामचरितमानस) यह पंक्ति सच्ची मित्रता की परिभाषा प्रस्तुत करती है, जो सभी संस्कृतियों में समान रूप से मान्य है। इसके अतिरिक्त, रामायण में धर्म और नैतिकता के सार्वभौमिक सिद्धांत भी सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देते हैं—

“परहित सरिस धरम नहि भाई।

पर पीड़ा सम नहि अधमाई॥” (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड)

यह दोहा यह स्पष्ट करता है कि दूसरों का कल्याण करना ही सच्चा धर्म है, जो सभी समाजों और संस्कृतियों में समान रूप से लागू होता है। रामायण का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि यह विविधता में एकता की भावना को प्रोत्साहित करती है। विभिन्न पात्रों, परिस्थितियों और संस्कृतियों के बावजूद, कथा का मूल संदेश एक ही रहता है—सत्य, धर्म और प्रेम की विजय। यही कारण है कि रामायण विभिन्न समाजों को जोड़ने का कार्य करती है। अतः यह स्पष्ट है कि रामायण केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक वैश्विक सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है, जो मानवता को एकता, समरसता और भाईचारे के सूत्र में बाँधती है। इसके आदर्श और मूल्य आज भी विश्व को जोड़ने और शांति स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

9. आध्यात्मिक चेतना का विकास

रामायण केवल एक नैतिक या सांस्कृतिक ग्रंथ ही नहीं, बल्कि यह मानव की *आध्यात्मिक चेतना* को जाग्रत करने वाला एक महान मार्गदर्शक भी है। यह ग्रंथ आत्मा और परमात्मा के संबंध को समझने, जीवन के परम उद्देश्य की पहचान करने तथा भक्ति, ज्ञान और कर्म के समन्वय के माध्यम से आत्मोन्नति की दिशा में अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। रामायण में वर्णित श्रीराम का चरित्र केवल एक आदर्श मानव का नहीं, बल्कि परमात्मा के साकार स्वरूप का भी प्रतीक है। *अध्यात्म रामायण* में स्पष्ट कहा गया है— **“रामो विग्रहवान् धर्मः।”** अर्थात् श्रीराम स्वयं धर्म के साकार रूप हैं। यह कथन यह संकेत करता है कि राम केवल ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि वह दिव्य सत्ता हैं, जिनके माध्यम से मानव धर्म, सत्य और आत्मज्ञान को प्राप्त कर सकता है। रामायण में भक्ति को आध्यात्मिक उन्नति का प्रमुख साधन माना गया है। *रामचरितमानस* में तुलसीदास जी कहते हैं—

“रामहि केवल प्रेम पिआरा।

जानि लेहु जो जाननिहारा॥” (रामचरितमानस)

यह चौपाई यह स्पष्ट करती है कि श्रीराम को केवल प्रेम और भक्ति ही प्रिय है। यह भक्ति मार्ग को सरल, सहज और सार्वभौमिक बनाता है, जिससे कोई भी व्यक्ति आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है। रामायण में आत्मा और परमात्मा के अद्वैत संबंध का भी संकेत मिलता है। सम्पूर्ण सृष्टि में एक ही चेतना के दर्शन इस प्रकार व्यक्त किए गए हैं—

“सिया राममय सब जग जानी।

करउँ प्रणाम जोरि जुग पानी॥” (रामचरितमानस, बालकाण्ड)

यह दोहा यह दर्शाता है कि सम्पूर्ण जगत में राम और सीता के रूप में एक ही दिव्य सत्ता व्याप्त है। यह विचार अद्वैत दर्शन और सार्वभौमिक एकता की भावना को प्रकट करता है। आध्यात्मिक चेतना के विकास में त्याग, तप और धैर्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है। श्रीराम का वनवास केवल एक सामाजिक या पारिवारिक घटना नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक साधना का प्रतीक है। इस संदर्भ में— **“धर्मैव हि साध्यन्ति सर्वार्थाः पृथिवीतले।”** (वाल्मीकि रामायण) यह श्लोक यह स्पष्ट करता है कि धर्म के मार्ग पर चलकर ही जीवन के सभी उद्देश्यों की प्राप्ति संभव है, जो अंततः आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाता है। रामायण में गुरु और शिष्य के संबंध को भी आध्यात्मिक विकास का आधार माना गया है। *विश्वामित्र* और श्रीराम का संबंध यह दर्शाता है कि ज्ञान और साधना के माध्यम से आत्मबोध प्राप्त किया जा सकता है। हनुमान जी का चरित्र भक्ति और सेवा के माध्यम से आध्यात्मिक उत्कर्ष का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है—

**“बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देह मोहिं, हरहु कलेश विकार ॥”** (हनुमान चालीसा)

यह प्रार्थना आत्मसमर्पण और भक्ति की उस अवस्था को दर्शाती है, जहाँ साधक ईश्वर से शक्ति, ज्ञान और शुद्धता की याचना करता है। रामायण में यह भी बताया गया है कि आध्यात्मिक उन्नति केवल संन्यास या तपस्या से ही नहीं, बल्कि अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए भी संभव है। श्रीराम का जीवन इस तथ्य का प्रमाण है कि एक गृहस्थ और राजा होते हुए भी व्यक्ति उच्चतम आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त, रामायण में मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग भी दर्शाया गया है, जो भक्ति, ज्ञान और कर्म के संतुलन पर आधारित है। यह संतुलन मानव को जीवन के बंधनों से मुक्त कर आत्मिक शांति प्रदान करता है। अतः यह स्पष्ट है कि रामायण केवल एक कथा नहीं, बल्कि एक गहन आध्यात्मिक ग्रंथ है, जो मानव को आत्मज्ञान, भक्ति और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। इसके माध्यम से व्यक्ति न केवल अपने जीवन को सार्थक बना सकता है, बल्कि परमात्मा के साथ अपने संबंध को भी अनुभव कर सकता है। यही कारण है कि रामायण का आध्यात्मिक संदेश आज भी सम्पूर्ण विश्व में उतना ही प्रासंगिक और प्रेरणादायक है जितना प्राचीन काल में था।

10. शिक्षा और जीवन-दर्शन

रामायण केवल एक धार्मिक या पौराणिक ग्रंथ नहीं, बल्कि यह एक समग्र *शिक्षा-दर्शन* और *जीवन-दर्शन* प्रस्तुत करने वाला महान ग्रंथ है। इसमें ज्ञान (शिक्षा), नीति (आचार-विचार), धर्म (कर्तव्य) और व्यवहार (व्यक्तित्व निर्माण) का अद्भुत समन्वय मिलता है। यह ग्रंथ मनुष्य को केवल विद्वान ही नहीं, बल्कि एक आदर्श, संवेदनशील और नैतिक व्यक्ति बनने की प्रेरणा देता है। रामायण की शिक्षाएँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक—को संतुलित और सार्थक बनाने में सहायक हैं। रामायण में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और नैतिक विकास है। श्रीराम और लक्ष्मण की शिक्षा *गुरु विश्वामित्र* के मार्गदर्शन में होती है, जहाँ उन्हें केवल शास्त्रों का ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन के व्यावहारिक और नैतिक पक्षों की भी शिक्षा दी जाती है। यह संकेत करता है कि सच्ची शिक्षा वही है, जो व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करे। इस संदर्भ में *रामचरितमानस* का यह प्रसिद्ध दोहा शिक्षा और जीवन-दर्शन का मूल तत्व प्रस्तुत करता है—

**“परहित सरिस धरम नहि भाई।
पर पीड़ा सम नहि अधमाई ॥”** (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड)

यह दोहा यह सिखाता है कि दूसरों का कल्याण करना ही सर्वोत्तम धर्म है। यह शिक्षा व्यक्ति को निःस्वार्थ सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व की ओर प्रेरित करती है। रामायण में सत्य, वचनपालन और नैतिकता को शिक्षा का आधार माना गया है—

**“रघुकुल रीति सदा चली आई।
प्राण जाए पर वचन न जाई ॥”** (रामचरितमानस, बालकाण्ड)

यह चौपाई यह स्पष्ट करती है कि जीवन में सत्य और वचन की दृढ़ता सबसे महत्वपूर्ण है। यह शिक्षा व्यक्ति को ईमानदारी और विश्वसनीयता का मार्ग दिखाती है। जीवन-दर्शन के स्तर पर रामायण यह सिखाती है कि व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए संतुलित जीवन जीना चाहिए। *वाल्मीकि रामायण* में धर्म की इस महत्ता को इस प्रकार व्यक्त किया गया है— **“धर्मैव हि साध्यन्ति सर्वार्थाः पृथिवीतले।”** यह श्लोक यह दर्शाता है कि जीवन के सभी उद्देश्यों की प्राप्ति धर्म और कर्तव्य के पालन से ही संभव है। रामायण में आदर्श संबंधों के माध्यम से भी जीवन की शिक्षा दी गई है। राम और भरत का भाईचारा, राम और सीता का दाम्पत्य जीवन, तथा राम और हनुमान की भक्ति—ये सभी उदाहरण व्यक्ति को संबंधों की मर्यादा और महत्व का बोध कराते हैं। भरत के त्याग को इस प्रकार व्यक्त किया गया है— **“भरतहि होइ न राजमदु कबहुँ।”** (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड) यह पंक्ति यह सिखाती है कि सच्चा नेतृत्व और महानता त्याग और विनम्रता में निहित होती है। रामायण का जीवन-दर्शन यह भी बताता है कि कठिनाइयाँ जीवन का अभिन्न अंग हैं, परंतु धैर्य, संयम और विश्वास के साथ उनका सामना किया जा सकता है। श्रीराम का वनवास, सीता का धैर्य और हनुमान की निष्ठा इस बात के

उदाहरण हैं कि विपरीत परिस्थितियों में भी मनुष्य अपने आदर्शों पर अडिग रह सकता है। आध्यात्मिक शिक्षा के संदर्भ में भी रामायण अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह व्यक्ति को आत्मज्ञान और भक्ति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है—

**“रामहि केवल प्रेम पिआरा।
जानि लेहु जो जाननिहारा ॥”** (रामचरितमानस)

यह चौपाई यह दर्शाती है कि सच्चा ज्ञान और मुक्ति प्रेम और भक्ति में निहित है। रामायण में नीति और आचार का भी अत्यंत सुंदर समन्वय मिलता है। यह ग्रंथ सिखाता है कि व्यक्ति को अपने आचरण में सत्य, करुणा, विनम्रता और सहिष्णुता को अपनाना चाहिए। इस संदर्भ में—

**“धीरज धरम मित्र अरु नारी।
आपद काल परखिए चारी ॥”** (रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड)

यह चौपाई यह बताती है कि जीवन के महत्वपूर्ण तत्वों—धैर्य, धर्म, मित्र और नारी—की वास्तविक परीक्षा कठिन समय में होती है। इसके अतिरिक्त, रामायण यह भी सिखाती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के कल्याण में योगदान देना भी है। श्रीराम का जीवन इस बात का उदाहरण है कि एक आदर्श व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए समाज के लिए भी प्रेरणा बन सकता है। रामायण एक ऐसा समग्र जीवन-दर्शन प्रस्तुत करती है, जो व्यक्ति को नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से उन्नत बनाता है। इसकी शिक्षाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी प्राचीन काल में थीं, और यह मानव जीवन को सही दिशा देने वाला एक अमूल्य मार्गदर्शक ग्रंथ है।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि *रामायण* केवल एक धार्मिक या पौराणिक ग्रंथ नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए एक सार्वकालिक और सार्वभौमिक मार्गदर्शक ग्रंथ है। इसमें निहित नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक मूल्य मानव जीवन को संतुलित, अनुशासित और सार्थक बनाने की दिशा प्रदान करते हैं। श्रीराम का आदर्श चरित्र—सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता, त्याग, मर्यादा और करुणा—मानव के लिए सर्वोच्च आदर्श स्थापित करता है, जो हर युग और हर समाज में प्रासंगिक है। रामायण का वैश्विक प्रभाव इस बात का प्रमाण है कि इसके मूल मूल्य किसी एक देश, धर्म या संस्कृति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह सम्पूर्ण विश्व की साझा धरोहर है। एशिया के अनेक देशों में इसके विभिन्न रूपों का प्रचलन यह दर्शाता है कि रामकथा ने सांस्कृतिक सीमाओं को पार करते हुए वैश्विक एकता और भाईचारे को सुदृढ़ किया है। इसके माध्यम से यह संदेश मिलता है कि सत्य, धर्म और न्याय की विजय सर्वत्र और सर्वकालिक सत्य है। रामराज्य की अवधारणा आदर्श शासन व्यवस्था का एक उत्कृष्ट मॉडल प्रस्तुत करती है, जिसमें जनकल्याण, समानता, न्याय और नैतिकता सर्वोपरि हैं। वर्तमान समय में जब विश्व सामाजिक असमानता, नैतिक संकट और राजनीतिक अस्थिरता जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है, तब रामायण के सिद्धांत इन समस्याओं के समाधान हेतु महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, रामायण में स्त्री के सम्मान, सामाजिक समरसता, पारिवारिक मूल्यों और कर्तव्यनिष्ठा पर जो बल दिया गया है, वह आधुनिक समाज के लिए अत्यंत आवश्यक है। सीता, भरत, लक्ष्मण और हनुमान जैसे पात्र मानव जीवन के विविध आदर्शों को मूर्त रूप देते हैं, जो व्यक्ति को आत्मचिंतन और आत्मविकास के लिए प्रेरित करते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से भी रामायण मानव को आत्मज्ञान, भक्ति और मोक्ष के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। यह ग्रंथ यह सिखाता है कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य केवल भौतिक सफलता नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति भी है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि रामायण एक ऐसा महाकाव्य है, जो अतीत, वर्तमान और भविष्य—तीनों कालों में समान रूप से प्रासंगिक है। यह मानव जीवन को दिशा देने वाला एक प्रकाशस्तंभ है, जो न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि वैश्विक शांति, एकता और सद्भाव की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यही रामायण का वास्तविक वैश्विक अवदान है, जो इसे सम्पूर्ण मानवता के लिए अमूल्य धरोहर बनाता है।

संदर्भ सूची

1. वाल्मीकि. (संस्करण). *वाल्मीकि रामायण*. गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. तुलसीदास, गोस्वामी. *रामचरितमानस*. गीता प्रेस, गोरखपुर।
3. व्यास. *अध्यात्म रामायण*. गीता प्रेस, गोरखपुर।
4. शर्मा, रामकुमार. *भारतीय संस्कृति का इतिहास*. राजपाल एंड संस।
5. मिश्रा, विद्यानिवास. *भारतीय परंपरा और आधुनिकता*. वाणी प्रकाशन।
6. पाण्डेय, हजारीप्रसाद. *भारतीय संस्कृति के स्वरूप*. राजकमल प्रकाशन।
7. त्रिपाठी, रामनारायण. *रामायण का सांस्कृतिक अध्ययन*. साहित्य भवन।
8. चतुर्वेदी, रामस्वरूप. *भारतीय दर्शन और संस्कृति*. लोकभारती प्रकाशन।
9. वर्मा, रामविलास. *भारतीय साहित्य की भूमिका*. राजकमल प्रकाशन।
10. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. *हिन्दी साहित्य की भूमिका*. राजकमल प्रकाशन।
11. सिंह, नामवर. *भारतीय साहित्य की अवधारणा*. वाणी प्रकाशन।
12. गुप्ता, रामचन्द्र. *रामायण और भारतीय समाज*. लोकभारती।
13. तिवारी, रामेश्वर. *भारतीय संस्कृति और रामायण*. साहित्य भवन।
14. मिश्र, कृष्णदेव. *रामकथा का वैश्विक स्वरूप*. विश्वविद्यालय प्रकाशन।
15. श्रीवास्तव, श्यामसुंदर. *रामायण और जीवन-दर्शन*. वाणी प्रकाशन।
16. पाठक, रामनाथ. *रामायण में नैतिक मूल्य*. साहित्य भवन।
17. यादव, जगदीश. *रामायण और समाजशास्त्र*. लोकभारती।
18. सक्सेना, सुधीर. *रामायण का राजनीतिक दर्शन*. राजकमल प्रकाशन।
19. अवस्थी, रामनरेश. *रामायण में नारी चरित्र*. वाणी प्रकाशन।
20. श्रीवास्तव, उर्मिला. *भारतीय संस्कृति और नारी*. लोकभारती।
21. तिवारी, महेन्द्र. *रामराज्य की अवधारणा*. साहित्य भवन।
22. मिश्रा, सत्यदेव. *रामायण का दार्शनिक अध्ययन*. विश्वविद्यालय प्रकाशन।
23. अग्रवाल, वासुदेवशरण. *भारतीय कला और संस्कृति*. राजकमल प्रकाशन।
24. जोशी, लक्ष्मीनारायण. *भारतीय संस्कृति का विकास*. वाणी प्रकाशन।
25. पाण्डेय, राजबली. *हिन्दू धर्म और संस्कृति*. चौखम्बा प्रकाशन।
26. सिंह, केदारनाथ. *भारतीय काव्य परंपरा*. राजकमल प्रकाशन।
27. चतुर्वेदी, बनारसीदास. *भारतीय संस्कृति के मूल तत्व*. लोकभारती।
28. शर्मा, नरेन्द्र. *रामायण और भारतीय दर्शन*. वाणी प्रकाशन।
29. द्विवेदी, रमेशचन्द्र. *रामकथा का तुलनात्मक अध्ययन*. साहित्य भवन।
30. गुप्ता, हरिशंकर. *भारतीय संस्कृति का स्वरूप*. राजपाल एंड संस।
31. पाठक, सुरेशचन्द्र. *रामायण और आधुनिक समाज*. विश्वविद्यालय प्रकाशन।
32. मिश्रा, शिवकुमार. *रामायण का सांस्कृतिक महत्व*. लोकभारती।
33. तिवारी, विजय. *रामायण का सामाजिक विश्लेषण*. वाणी प्रकाशन।
34. श्रीवास्तव, गोपाल. *भारतीय संस्कृति और नैतिकता*. साहित्य भवन।
35. वर्मा, सुरेश. *रामायण और विश्व साहित्य*. राजकमल प्रकाशन।
36. पाण्डेय, दिनेशचन्द्र. *रामायण का वैश्विक प्रभाव*. विश्वविद्यालय प्रकाशन।
37. मिश्र, अरुण. *रामायण और आध्यात्मिकता*. वाणी प्रकाशन।
38. यादव, रमेश. *रामायण और शिक्षा-दर्शन*. लोकभारती।
39. शर्मा, अशोक. *रामायण और सांस्कृतिक एकता*. साहित्य भवन।
40. तिवारी, ओमप्रकाश. *रामायण और भारतीय जीवन*. वाणी प्रकाशन।
41. सिंह, सुरेश. *रामायण का समकालीन अध्ययन*. राजकमल प्रकाशन।